IJAER/March-April 2021 /Volume-10/Issue 5 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

द्वाराहाट के कत्यूरी राजवंश का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ0 नीरज रूबाली
इतिहास विभाग।
एम0बी0पी0जी0 कालेज हल्द्वानी

घनानंद
इतिहास विभाग।
एम0बी0पी0जी0 कालेज हल्द्वानी

प्रस्तावना

द्वाराहाट उत्तराखंड में स्थित एक छोटा सा कस्बा है। वर्तमान में कुमाऊं कमिश्नरी के अल्मोड़ा जनपद में द्वाराहाट स्थित है। द्वाराहाट के चारों ओर का परिदृश्य बेहद मनोरम है। दुम्का और जोशी की पुस्तक 'उत्तराखंड का इतिहास' के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उत्तराखंड क्षेत्र के प्राचीनतम निवासी 'डोम' थे। विभिन्न जातियों के आगमन एवं उनके आक्रमणों ने यहां के प्राचीन निवासियों को जीत लिया तथा उन्हें अपना दास बना लिया। राहुल सांकृत्यायन अपने 'कत्यूरियों की भूमि' के यात्रा वृत्तांत में उल्लेख करते हैं कि द्वाराहाट क्षेत्र के भ्रमण के दौरान उन्हें कई मृत दफनाए गए लोगों की समाधियाँ देखी थी जो वहां के निवासियों की थी। 'खशों' में मृतकों को दफनाने की प्रथा विद्यमान थी। एल. डी. जोशी का मत है कि इस क्षेत्र में मैदानी भागों तथा तिब्बती क्षेत्र से आए लोगों के अतिरिक्त यहां के जनसंख्या में 3 वर्ग हैं। खश ब्राह्मण एवं राजपूत, खश ब्राह्मण तथा तृतीय वर्ग में डोम वंश के लोग हैं। एटकिंसन के मतानुसार कुमाऊं में अधिसंख्य निवासी खश हैं। द्वाराहाट क्षेत्र के साथ-साथ ही संपूर्ण कुमाऊं में आज भी राजपूत वर्ग के लोगों को स्थानीय भाषा में 'खशी' अथवा 'खशिया' के नाम से पहचाना जाता है जो खश जाति का ही द्योतक है। बैरीमैन (1963:14) का विचार है कि पहाड़ी क्षेत्र में निवास करने वाली जातियों में प्रमुख रूप से डोम एवं खश नृवंश के लोग हैं तथा उत्तरी सीमांत में निवास करने वाली मंगोलाइड एवं तिब्बती बर्मी भाषा-भाषी जाति है। मैदानी क्षेत्र से आने वाले ब्राह्मण एवं राजपूत प्रवासियों के साथ संपर्क स्थापित होने से

खस लोग क्रमशः ब्राह्मण एवं राजपूत कहलाने लगे। स्थानीय भाषा में सवर्णों को 'बीठ' कहा जाता है जिनमें ब्राह्मण तथा राजपूत आते हैं। पिछड़ी जाति के लोगों को उनके अलग अलग व्यवसाय के रूप में पहचाना जाता है। जैसे तेली को 'भूल' और घर बनाने का काम करने वाले को 'ओड़', 'ल्वार', लोहे का सामान बनाने वाला। कालीखोली में ईसाइयों की बस्ती है। आधुनिक काल में अंग्रेजों के आगमन एवं ईसाई मिशनरियों के प्रभाव से स्थानीय निवासियों ने ईसाई मत को स्वीकार किया। ईसाई मत में परिवर्तित, अधिकांश लोग जातीय दृष्टि से पिछड़े हैं। सवर्णों के जाति आधिपत्य के सिद्धांत से दुखी होकर तथा ईसाई मिशनरियों के प्रभाव से यह लोग ईसाई मत में दीक्षित हुए हैं। ऐसा अनुमान राहुल सांकृत्यायन ने भी व्यक्त किया है।

'डोम' वर्ग के लोग भी मैदानी क्षेत्रों से आने वाले शिल्पी वर्ग के प्रभाव के कारण तथा उच्च वर्ग द्वारा मैदानी लोगों के समान उच्च वर्ग में पहुंचने की लालसा से भिन्न-भिन्न व्यवसायों के अनुरूप शिल्पी वर्ग का निर्माण कर शिल्पकार कहलाने लगे हैं। आज हम देखते हैं कि संपूर्ण कुमाऊं क्षेत्र के साथ-साथ द्वाराहाट क्षेत्र के आसपास से संबन्धित, पिछड़े वर्ग के लोगों को 'शिलपकार' कहा जाता है। शिलपकार शब्द कुमाऊंनी में शिल्पकार का ही अपभ्रंश है। द्वाराहाट सहित संपूर्ण कुमाऊं में जातिवाद भारत के अन्य स्थानों की अपेक्षा उतनी बुरी स्थिति में नहीं है। छुआछूत तो है, जिसकी भविष्य में पूर्ण रूप से समाप्त हो जाने की पूरी संभावना है। उत्तराखंड की भौगोलिक स्थिति भी यहां पर आपसी भाईचारे एवं सहयोग में काफी हद तक सहायक है। सांस्कृतिक दृष्टि से द्वाराहाट क्षेत्र काफी समृद्ध रहा है। यहां के प्राचीन मंदिर समूह इस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान है। गीत, संगीत, नृत्य, लोक साहित्य में द्वाराहाट का नाम संपूर्ण कुमाऊं में जाना जाता है। यहां के मेले तथा मेलों एवं उत्सव में गाए जाने वाले झोड़ें तथा चाचरी गीत सांस्कृतिक विशेषता के प्रतीक हैं। इन लोकगीतों में द्वाराहाट क्षेत्र की संस्कृति तथा इतिहास के दर्शन होते हैं। कई बार यह लोकगीत इस क्षेत्रविशेष के साथ-साथ देश की तत्कालीन राजनीतिक तथा सामाजिक स्थिति का भी परिचय देते हैं।

चैत्र मास की प्रथम तिथि को फूलदेई का त्योहार मनाया जाता है। यह त्योहार वसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक है। यह त्योहार मुख्यतः बच्चों द्वारा मनाया जाता है। चैत्र मास के इस मौसम में विभिन्न प्रकार के फूल खिले होते हैं। बुरांश, धौल, मिझाऊ, दूध-भाति तथा सेमल के फूलों का सौंदर्य देखते ही बनता है। पहाड़ी क्षेत्र होने की वजह से यहां पर विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां और पौधे पाए जाते हैं। चैत्र मास में सभी वृक्ष नये पत्तियों तथा फूलों से लदे होते हैं। आड़ू, खुबानी, नाशपाती आदि के पेड़ों पर रंग-बिरंगे फूल बेहद चित्त आकर्षक होते हैं। चैत्र मास की प्रथम तिथि से ही लोक गीतों को गाने का मौसम शुरू हो जाता है। पूरे माह ये गीत गाए जाते हैं। देश के नायकों के सम्मान की गाथा झोड़ों के माध्यम से प्रस्तुत होती है।

गांधीजी तुम अमर रया।
देश की रकक्षा करन रया।।

अर्थात राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का स्तुति गान, जिसमें कामना की गई है कि गांधी जी आप अमर रहें, आप हमारी देश की रक्षा करते रहना। इन झोड़ों में कई बार स्थानीय देवी-देवताओं का स्तुति गान किया जाता है। विभिन्न फूलों को अर्पण कर मां भगवती और मां काली का स्तुति गान किया जाता है जैसे

फूलां हजारी को फूला ते फूला देवी चढ़ंला।
फूलां खुमानी को फूला ते फूला देवी चढ़ंला।।
फूलां बुरूशी को फूला ते फूला देवी चढ़ंला।
फूलां मिझाउ को फूला ते फूला देवी चढ़ंला।।

द्वाराहाट की मुख्य सांस्कृतिक पहचान, क्षेत्र में संपन्न होने वाला प्रसिद्ध 'स्यालदे-बिखोति' का मेला है। इस मेले का आयोजन प्रति वर्ष चैत्र मास की अंतिम तिथि से प्रारंभ होकर वैशाख माह की प्रथम तिथि को 'ओड़ा भेंटने' की परंपरा के साथ समाप्त

होता है। स्यालदे का मेला दो भागों में लगता है। पहले भाग में यह मेला विमांडेश्वर में लगता है जिसे स्थानीय भाषा में बिखोति का मेला कहा जाता है। तथा दूसरे भाग में यह द्वाराहाट में लगता है। द्वाराहाट में यह मेला अगले दिन अर्थात बिखोति के मेले के दूसरे दिन, दिन के समय लगता है। यह मेला इस क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर है। पूरे क्षेत्र में गाए जाने वाले झोड़ों का स्यालदे-बिखोति मेले में समापन किया जाता है।

कत्यूरी राजवंश का उदय

सातवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उत्तरांचल में कत्यूरी राजवंश का उदय हुआ। पावेल-प्राइस के अनुसार कत्यूरी कुणिंदों के वंशज थे। यह तथ्य सर्वमान्य है कि जब चौथी शताब्दी ईस्वी में उत्तरी भारत में गुप्त साम्राज्य का उत्कर्ष हुआ तभी उत्तराखंड के क्षेत्र में कुणिंद राजा राज्य कर रहे थे। उनका राज्य कर्तृपुर के नाम से जाना जाता था। प्रयाग प्रशस्ति (Fleet 1970:8f) से ज्ञात होता है कि कर्तृपुर ने गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त को विभिन्न प्रकार के कर दिए और उसकी आज्ञा का पालन किया। कुणिंदों के पश्चात यहां पर पौरव वर्मन राजाओं ने शासन किया। इस काल में उत्तराखंड को ब्रह्मपुर कहा जाता था। कत्यूरी कुणिंदों के वंशज थे परंतु अपने मत की पुष्टि हेतु समुचित प्रमाण उपलब्ध करा सकने के कारण कालांतर में पावेल प्राइस ने अपना मत बदलकर सुझाया कि यदि कुणिंद, कत्यूरियों के वंशज नहीं थे तो उनके राजनीतिक उत्तराधिकारी थे। हाल ही में माहेश्वर प्रसाद जोशी ने नए साक्ष्यों के आधार पर इस विषय में विस्तार से चर्चा की है और पावेल प्राइस के मत को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया है। कत्यूरी राजवंश के कई अभिलेख प्रकाश में आ चुके हैं जिनके समग्र अध्ययन करने के उपरांत ऐसा प्रतीत होता है कि कत्यूरी शासक जब से कत्यूर घाटी में अपना शासन स्थापित किए तभी से कत्यूरी कहलाएं होंगे। आज भी लोक गाथाओं में कत्यूरियों की संख्या नौ लाख बताई जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि मूलतः कत्यूरिओं का सामाजिक राजनीतिक संगठन कबीलियाई गणतंत्रामक था। उत्तराखंड के इतिहास में प्रभावी गण/कबीलियाई संगठन कुणिंदों का ही था जो कि यहां सर्वत्र फैले थे और उनके पृथक-पृथक कई मुखियाजन्य

संगठन थे। क्रमशः गुप्तों एवं पौरव वर्मनों के काल में राजनीतिक दृष्टि से नेपथ्य में चले गए।

कत्यूरी कौन थे? कहां से आए थे? इत्यादि प्रश्नों का कोई स्पष्ट उत्तर अभी तक प्राप्त नहीं हुआ। एटकिंशन ने कत्यूर शब्द को कटार शब्द के समतुल्य मानकर कत्यूरी वंश को काबुल और पश्चिम हिमालय के ढलानों में बसी कटोर नामक आयुधजीवी जाति का वंशज माना है।

परंतु कटार और कत्यूरी एक ही थे इस संबंध में ऐतिहासिक प्रमाण का अभाव है। राहुल सांकृत्यायन कत्यूरी वंश को शक कुषाण से संबन्धित मानते हैं। उनके अनुसार हूणों से पराजित होने के पश्चात शक-कुषाणों ने उत्तराखंड में कत्यूरी वंश की नींव डाली होगी। वे शक शासक शालिवाहन तथा कत्यूरी वंश के संस्थापक शालिवाहन को एक मानते हैं। अपने कथन को प्रमाणित करने के लिए उन्होंने कत्यूरी राजाओं द्वारा निर्मित कटारमल, बागेश्वर आदि के मंदिरों में जो बूट धारी सूर्य की मूर्तियां हैं उन्हें शकों की देन माना है।

शिव प्रसाद डबराल कत्यूरियों को खश मानते हैं। इसको प्रमाणित करने के लिए उन्होंने पाल नरेशों के अभिलेखों का सहारा लिया है। पाल कत्यूरियों के समकालीन थे, उनके अभिलेखों में खश देश को उनके अधीन माना गया है। खश उत्तराखंड की शक्तिशाली जाति मानी जाती थी। उन्होंने किरात तथा कोलों को पराजित किया था। उनके द्वारा उत्तराखंड में शासन करने के अनेक प्रमाण भी मिलते हैं। कत्यूरी वंश को खश जाति से संबंधित करना अधिक उचित प्रतीत होता है इसके अतिरिक्त खश तथा कत्यूरी वंश की सामाजिक स्थिति में भी काफी समानता थी।

कत्यूरी वंश से संबंधित अनेक स्मारक तथा कलाकृतियां प्राप्त हुई हैं जिनसे तत्कालीन धार्मिक तथा सामाजिक स्थिति पर विशेष रूप से प्रकाश पड़ता है। इन स्मारकों से कत्यूरी काल में उत्तराखंड की सांस्कृतिक उन्नति के साथ-साथ राजा तथा प्रजा की धार्मिक भावना की अभिव्यक्ति भी होती है।

सातवीं सदी में हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात उत्तरी भारत में राजनैतिक स्थिति खराब होने लगी थी। इस समय कुणिंद पुनः सक्रिय होने लगे उन्होंने सर्वप्रथम अपने को जोशीमठ में संगठित किया। कालांतर में वे कत्यूरी घाटी बैजनाथ में स्थापित हो गए जैसा कि कहा जा चुका है कि उन कुणिंदों के कई मुखियाजन्य संगठन थे जिनमें सर्वाधिक प्राचीन बसंत देव का घराना था। इसके उपरांत खर्पर देव का घराना आया, तत्पश्चात क्रमशः नरदेव, सलोणादित्य एवं लखन पाल का घराना आया। अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि निंबर के घराने को सलोणादित्य के घराने ने उखाड़ फेंका, यह सभी घराने कार्तिकेयपुर, कत्यूरी घाटी से शासन करते थे।

कालांतर में कत्यूरी 5-6 शाखाओं में विभक्त हो गये। इन शासकों ने सातवीं सदी के उत्तरार्द्ध से 11 वीं सदी तक शासन किया। कत्यूरी शासन प्रबंध बंगाल के पाल शासकों से अत्यधिक प्रभावित माना गया है। (Atkinson 1884:479 ff)

राजा ब्रह्मदेव ने जिनके नाम से ब्रह्मदेव की मंडी बसी, ने काली कुमाऊं में अपना राज्य स्थापित कर लिया, इनका किला सुई में था। और डोमकोट का रावत राजा इनके अधीन था।

इस तरह विस्तृत साम्राज्य छोटे-छोटे खंडों में विभाजित हो गया। कुमाऊं राज्य भर में तथा तराई भाबर में भी कत्यूरियों के स्मारक हैं। यहां के भूतपूर्व कमिश्नर बेटन साहब लिखते हैं कि इनमें से बहुत से चबूतरे तथा नौले, बावड़ियां बड़ी सुंदर लिखावट के हैं। इनके मंदिरों व इनके समय की मूर्तियों से ज्ञात होता है कि यह हिंदू देवी-देवताओं के कट्टर उपासक थे।

उद्भव व विकास

द्वाराहाट का ज्ञात इतिहास पुरातत्व के आधार पर कत्यूरियों के शासनकाल से प्रारंभ होता है। कत्यूरी कुमाऊं का प्रथम ऐतिहासिक राजवंश है। द्वाराहाट क्षेत्र ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है, यहां पर कत्यूरी तथा चंद राजाओं द्वारा शासन किया गया था।

कत्यूरी शासकों ने गढ़वाल जोशीमठ से चलकर गोमती नदी के किनारे बैजनाथ गांव के पास महादेव के पुत्र स्वामी कार्तिकेय के नाम से कार्तिकेय पुर नामक नगर बसाया जो आधुनिक समय में लुप्तप्राय है। कत्यूरी राज्य के टूटने पर यह एक वंश की राजधानी रही। जिसकी पाँच शाखाएं अलग-अलग स्थानों पर राज्य करने लगी। दूसरे कत्यूरी ब्रह्मदेव ने काली कुमाऊं का शासन संभाला एक शाखा डोटी में शासन करने लगी तथा एक शाखा अस्कोट में स्थापित हुई एक शाखा बारामंडल अर्थात वर्तमान अल्मोड़ा के आसपास राज्य करने लगी एक शाखा कत्यूर दानपुर की ओर पूर्ववत जमीं रही और एक शाखा द्वाराहाट तथा लखनपुर में शासन करती रही। प्रायः 200 वर्षों तक अर्थात 12 वीं शताब्दी से लेकर 14 वीं शताब्दी तक इस वंश की विभिन्न शाखाएं यहाँ वहाँ फैली हुई थी जिनमें कोई विशेष संबन्ध नहीं था। द्वाराहाट के राजाओं की नामावली निम्न प्रकार से है।

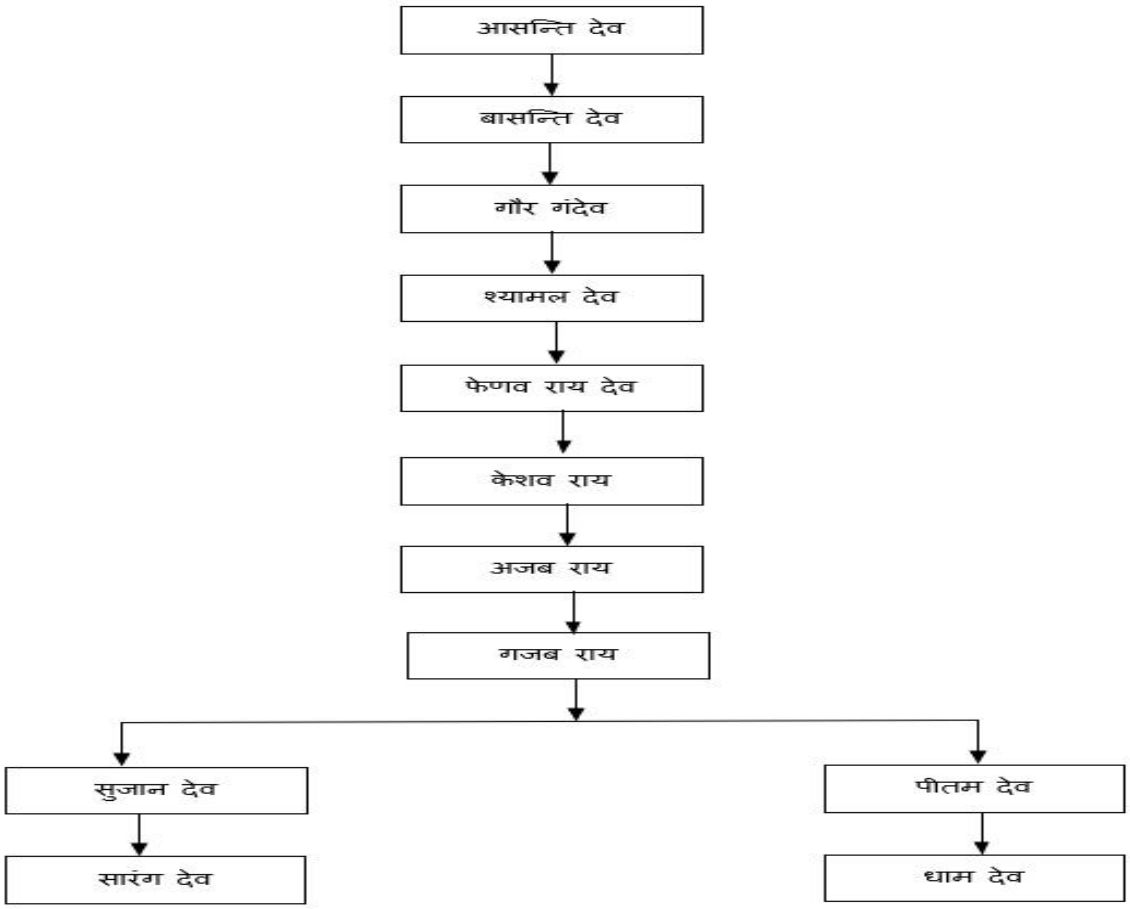

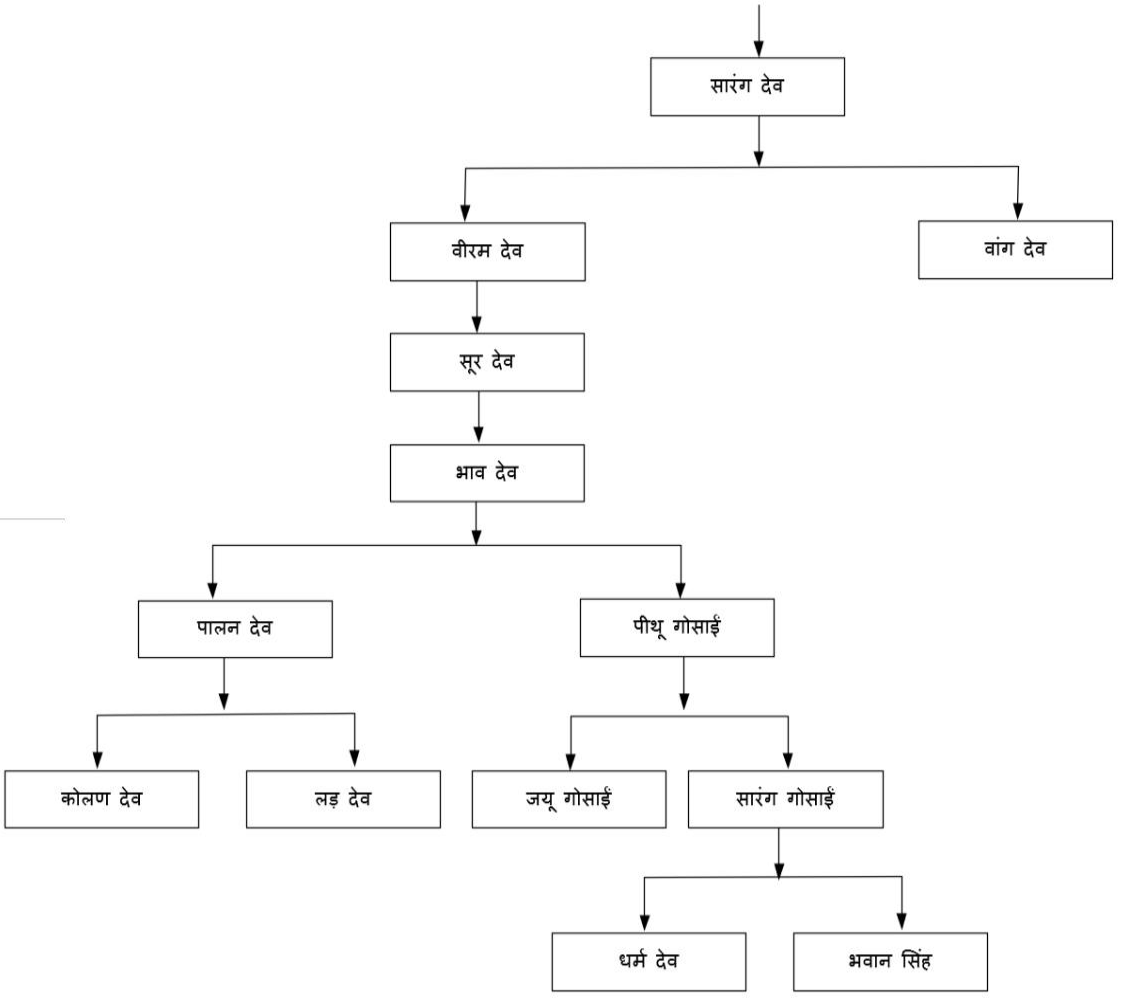

वीरेंद्र पाल के अध्ययन-"कुमाऊं में सांस्कृतिक पर्यटन-द्वाराहाट, देवीधुरा व पूर्णागिरि के विशेष संदर्भ में" से हमें पता चलता है कि राजा मानदेव के समय शक संवत् 1259 अर्थात सन् 1337 ईस्वी में वासुदेव त्रिपाठी को कत्यूरी में ग्राम दाड़िम ठौक को जागीर के रूप में दिया गया था। राजा सोमदेव ने शक संवत् 1271 सन् 1349 ईस्वी में एक रमणीय नौला द्वाराहाट में बनवाया था और शक संवत 1276 सन् 1354 ईस्वी में गणेश की मूर्ति गनाई चौखुटिया में स्थापित करवाई, इन प्रमाणों से हमें उपरोक्त राजाओं के बारे में तथा उनके किए गए कार्यों के बारे में पता चलता है।

कुमाऊंनी लोक गीतों में कत्यूरी राजवंशावली जो कार्तिकेयपुर वर्तमान बैजनाथ के निकट रणचूला दुर्ग लखनपुर (द्वाराहाट) तथा छिपटधार (भोट प्रांत) में शासन करते थे। उनका वर्णन निम्न गीतों के माध्यम से सुंदर और सरल ढंग से दिया गया है।

पछम खली में को को राजा बसनी

बूढ़ा राजा आसंती देव को पाट

गौर को पाट सांवला को पाट

नीली चौरी उझान को पाट

मान चवाणीं को घट लगायो

द्वाराहाट में दौर मंडल चीणों

रणचूलीहाट में राजा रमायो आसंदी

आसंदी को बासंदी

अजोपीथा, गजोपीथा, नरपीथा, पृथ्वीरंजन, पृथ्वीपाल।

अर्थात पश्चिम में खली (शाखा) में कौन-कौन राजा रहते थे? वहां बूढ़ा राजा आसंदी की राजगद्दी थी, वहां गौरा राजा की राजगद्दी थी, सांवला राजा की राजगद्दी थी, नीली चौकोर भूमि, समतल भूमि में उद्यान की गद्दी थी। उन्होंने भात के मांड़ और चावलों को धोने के पानी की ऐसी नदी का निर्माण किया कि सारे क्षेत्र के लोगों ने चावल धोए पानी को एकत्रित कर उस पानी से घट अर्थात पनचक्की चलाई जाती थी। रणचूलीहाट में अपना राज सिंहासन बनाया। आसंदी देव के पुत्र बासंदी देव हुए और उनके उपरांत अजोपीथा, गजोपीथा, नरपीथा, पृथ्वीरंजन और पृथ्वीपाल हुए।

कत्यूरियों की दूसरी शाखा पाली पछाऊं थी लोकगीतों में इसका भी उल्लेख है:-

दूसरी शाखा पाली पछाऊं

पाली पछाउं के राजा बसे?

इलणदेव, इलणदेव का तिलणदेव

अमरदेव, गरमदेव, नागरदेव, सुजान देव

सुजान देव किस रानी सुजानमति का सारंग देव

सारंग देव का द्वी च्याला-

राजा उत्तम देव, राजा बिरमदेव

अर्थात दूसरी शाखा थी पाली पछाऊं। पाली पछांउं में कौन-कौन राजा रहते थे?

इलणदेव, इलणदेव का पुत्र तिलणदेव, अमर देव, गरम देव, नागरदेव और सुजान देव। सुजान देव की रानी सुजानमती का पुत्र सारंग देव। सारंग देव के दो पुत्र राजा उत्तम देव तथा राजा विरमदेव।

निष्कर्ष

निश्चय ही कत्यूरिओं के शासनकाल में द्वाराहाट एक विशाल और सुंदर नगर रहा होगा। यहां कई जगह से ईंट, पत्थर, खपरैल, नालियां और मिट्टी के बर्तन आज भी खुदाई में प्राप्त होते रहते हैं। कई घरों की दीवारें तथा मकानों में लगे पत्थर पुराने मंदिरों के अवशेषों से प्राप्त पत्थर ही हैं।

स्रोत–

1. कुमाऊं का इतिहास:- पं॰ बद्रीदत्त पांडे
2. अल्मोड़ा जनपद का पुरातत्व:- मदन मोहन जोशी

3. कत्यूरी शासनकाल में उत्तराखंड की प्रशासनिक, संस्कृति एवं आर्थिक स्थिति एक अध्ययन:- राजेश कुमार सिंह डसीला

4. कुमाऊं में सांस्कृतिक पर्यटन द्वाराहाट, देवीधुरा व पूर्णागिरि के विशेष संदर्भ में:- वीरेंद्र पाल

5. पहाड़ 7 "कत्यूरी भूमि की यात्रा":- राहुल सांकृत्यायन

6. उत्तरांचल हिमालय समाज, संस्कृति, इतिहास एवं पुरातत्व:- माहेश्वर प्रसाद जोशी, कुमारी ललित प्रभा जोशी

7. उत्तराखंड इतिहास और संस्कृति:- चंद्रशेखर दुम्का, घनश्याम जोशी

8. कुमाऊं का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास (11 वीं से 18 वीं शताब्दी ईस्वी):- डॉ॰ विद्याधर सिंह नेगी

9. उत्तराखंड समग्र अध्ययन:- सविता मोहन

10. उत्तराखंड में गौरवशाली कत्यूरी राजवंश का समग्र अध्ययन पृष्ठ 203:- बलवंत सिंह

11. साक्षात्कार-गजेंद्र सिंह राणा, मल्ली मिरई

12. साक्षात्कार-कैलाश चंद्र सती, ग्राम सीमापानी

13. साक्षात्कार-कमल राम, ग्राम कफड़ा

14. साक्षात्कार-राजेंद्र पुरी, भारतीय पुरातत्व विभाग द्वाराहाट में कार्यरत

15. Dwarahat Wikipedia